रूद्रहांजी - एक बहुआयामी व्यक्तित्व

डॉ. कुमकुम माथुर

भोपाल शहर के तकरीबन मध्य में स्थित है कला और संस्कृति तथा धार्मिक आयोजनों का एक प्रमुख तथा व्यस्त केन्द्र रवीन्द्र नाट्य गृह। अगली बार जब भी कभी रवीन्द्र भवन जाएँ तो इस भवन की पूर्वी दीवार पर लगी हुई नटराज की मूर्ति को गौर से देखिएगा। नटराज की नृत्य मुद्रा और भंगिमा इतनी सम्मोहक है कि आप कुछ पलों के लिए उसमें खो जाएँगे। वैसे आते-जाते हम सब इसको देखते हैं, लेकिन कितने लोग जानते हैं कि रवीन्द्र भवन की महामुद्रा रूद्रहांजी की 'नटराज' की प्रतिकृति है। रूद्रहांजी द्वारा निर्मित नटराज की एक और भव्य प्रतिमा विद्या मंदिर मुरार में स्थापित है। नटराज की इस प्रतिमा में कलाकार ने मानों प्राण फूंक दिए हों। 'नटराज' शिव की प्रतिमा गतिपूर्ण महाकाव्य-सी प्रतीत होती है। 'नटराज' शिव संसार की लय की प्रतीक ज्वाला को अपने कर-कमल में धारण किए हुए है। नाग, धतूरा, चंद्रमा आदि का भी प्रतीकात्मक अंकन किया गया है। मंडप के स्तंभों पर पार्वती तथा मृदंग वादन करते मानवरूपी नंदी उत्कीर्ण है। नंदी का मानवीकरण नागवंशी मूर्तिकला में भी प्राप्त होता है, अपितु सौष्ठव, ऊर्जा एवं गति की सशक्त अभिव्यक्ति ने 'रूद्रप्पा' के नंदी को प्रशंसनीय और दर्शनीय बना दिया है। नटराज रूद्रहांजी के मूर्तिशिल्प के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

मध्य भारत निर्माण के पूर्व सिंधिया स्कूल के प्राचार्य के निर्देशन में कुछ उच्चकोटी के चित्रकार ग्वालियर आए। इनमें प्रभात नियोगी, उमेश कुमार, एल.एस. राजपूत, विजय मोहिते तथा 'रूद्रहांजी' विशेष उल्लेखनीय हैं। इसी समय मूर्तिकला के क्षेत्र में आर.ए. फड़के (धारे) ग्वालियर में एम.एस. भाण्ड, रूद्रहांजी, देवलालीकर आदि कलाकार इतिहास रच रहे थे। लक्ष्य, साधना और साधक तीनों में अभेद स्थापित होकर वे एक रूप हो जाएँ। ऐसे चमत्कारिक व्यक्तित्व के रूप में एक ही उदाहरण मेरे मस्तिष्क में आता है, वे हैं कर्नाटक में जन्मे परन्तु ग्वालियर में बसे महान कलाकार 'रूद्रहांजी'।

छाया : सुरजीत

भूतपूर्व ग्वालियर राज्य में महारानी विजयाराजे सिंधिया के सद्प्रयास से पद्मा विद्यालय के रूप में एक अत्यंत परिष्कृत कला केन्द्र की स्थापना की गई। इसमें कला शिक्षक कार्य के लिए श्री रूद्रप्पा अथवा रूद्रहांजी बुलाए गए। शांति निकेतन से चित्रकला एवं मूर्तिकला की शिक्षा प्राप्त कर 'रूद्र' तब बनारस में कला अध्यापक नियुक्त थे, वहीं आपकी कला से महारानी सिंधिया प्रभावित हुई और इन्हें ग्वालियर बुलाया गया।

रूद्रहांजी का जन्म 7 मई, 1911 को तारिकेरे (कर्नाटक) में हुआ। मैसूर से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् सन् 1930 में शांति निकेतन के विश्वभारती

विश्वविद्यालय में प्रवेश लेकर रूद्रहांजी ने आचार्य नंदलाल बोस तथा रामकिंकर जैसे विश्वख्याति प्राप्त कलाकारों द्वारा चित्रकला एवं मूर्तिकला का शिक्षण प्राप्त किया। 1936 में रूद्रहांजी बसंत महाविद्यालय, वाराणसी में कला शिक्षक नियुक्त हुए। 1944 में ग्वालियर पद्मा विद्यालय के कला निर्देशक के रूप में आए, फिर ग्वालियर में ही बस गए। 6 फरवरी, 1980 की मध्यरात्रि में 69 वर्ष की आयु में रूद्रहांजी परलोक सिधारे।

रूद्रहांजी से मेरी प्रथम भेंट तब हुई जब मैं स्कूल की छात्रा थी। जब मुझे राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्राप्त हुई तब रूद्रहांजी को मार्गदर्शक बनाने की चाहत लिए मुझे मेरी माँ उनके जयेन्द्रगंज स्थित निवास स्थान पर ले गई थीं। मैं पद्मा विद्यालय में उनके द्वारा निर्मित मूर्तिकला के विभिन्न उदाहरणों से परिचित थी, परन्तु उनकी 'चित्रकला' से अनभिज्ञ थी। जब मैंने उनके निवास पर उनकी चित्रकृतियों को देखा तो निःसंदेह उस सरल सहज व्यक्तित्व ने मेरे किशोर हृदय को अत्यंत प्रभावित किया। रूद्रहांजी बहुत सरलता से मिले। उन्हें सभी स्नेह से 'रूद्रप्पा' कहकर संबोधित करते थे। रूद्रहांजी एक ऐसे व्यक्तित्व थे जो कला की अनन्य साधना में पूर्ण रूप से समर्पित थे।

रूद्रहांजी ने 'चित्रकला' में जलरंग माध्यम से कार्य किया। उन्होंने वॉश टेक्निक में अनेक कृतियाँ बनाईं। वे ग्वालियर से कला प्रतिनिधि के रूप में चीन गए थे इसीलिए उनके दृश्य-चित्रों में चीनी कला का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है। शांति निकेतन के विद्यार्थी होने के नाते बंगाल शैली का प्रभाव उनकी कृतियों में झलकता है। रूद्रहांजी ने स्क्रॉल पेंटिंग भी बनाई। उनकी कृतियों में प्रतीकात्मकता, व्यंग्य, अमूर्तता आदि गुण भी परिलक्षित होते हैं। उन्होंने रेखा-चित्रांकन भी अत्यंत लयात्मकता के साथ अंकित किए हैं।

छाया : प्रकाश कुलकर्णी

भोपाल के रवीन्द्र नाट्य गृह में नटराज की प्रतिकृति

डॉ. हरिहरनिवास द्विवेदी ने महान चित्रकार 'रूद्रप्पा' के विषय में अपने उद्‌गार कुछ इस तरह व्यक्त किए हैं : 'श्री रूद्र मूलतः मूर्तिकार हैं परन्तु आपकी 'चित्रकला' भी अत्यंत श्रेष्ठ है। आपकी 'नटी' रवीन्द्रनाथ की गीति नाटिका 'नटीर पूजा' के आधार पर निर्मित है और उसमें अजन्ता तथा चीन की चित्रकला का सम्मिश्रण दिखाई देता है, जिसके कारण उसमें अद्‌भुत मंजुलता, सुकोमलता तथा रूपश्री दिखाई देती है। इसी शैली का इनका 'मिश्र' नामक चित्र भी है। 'तूफान', नगाधिराज और सर्वोपरी 'कश्मीर' में एक सफल तथा परिष्कृत एवं प्रशस्त रुचि के चित्रकार के दर्शन होते हैं। 'राजतरंगिणी' के आधार पर कश्मीर के प्रारंभ से लेकर आधुनिक काल तक कश्मीर के इतिहास का अत्यंत प्रभावपूर्ण चित्रण किया गया है। कला की दृष्टि से उनके कुछ अंकन अत्यंत उत्कृष्ट हैं। श्री 'रूद्र' कुछ वर्ष पूर्व कुलुघाटी गए थे और वहाँ उन्होंने प्राकृतिक दृश्यों के चित्रों का जो अंकन किया था वह दृश्य चित्रकारों में उन्हें उच्च स्थान देता है।

रूद्रहांजी ने कागजी चित्रांकन के अलावा भित्ति-चित्रांकन भी किया। इस विद्या का एक उदाहरण बसन्त महाविद्यालय वाराणसी में अंकित है।

मूर्तिकला में रूद्रहांजी ने सादृश्य प्रतिमाएँ, अलंकारिक आलेखन, भारतीय दर्शन एवं धर्म से संबंधित प्रतिमाएँ आदि उकेरीं। 'रूद्रप्पा' ने मिट्टी एवं सीमेंट को मूर्तिकला हेतु अपना माध्यम बनाया। श्री हरिहरनिवास द्विवेदी जी ने रूद्रहांजी की मूर्तिकला को चार श्रेणियों में विभाजित किया है।

प्रथमतः- वे मूर्तियाँ और अर्द्धचित्र हैं जो प्राचीन तथा मध्यकालीन शैली में अलंकरण अथवा सौन्दर्यश्री का चित्रण करने के लिए बनाए गए। इनमें ग्वालियर मेले के मैदान में निर्मित विशाल द्वार देवियाँ, पद्मा विद्यालय में अलंकरण हेतु बनाई गई आकृतियाँ तथा रूपगर्विता, वृक्षिका, शंखवादिनी, 'नर्तकी' एवं 'बुद्ध' आकृतियाँ हैं।

दूसरे वर्ग में- सादृश्य मूर्तियाँ हैं, जिनमें महात्मा गांधी की दांडी यात्रा, सरदार पटेल तथा युवती का व्यक्ति चित्र लिया जा सकता है।

तृतीय वर्ग में- रूद्रहांजी द्वारा निर्मित नए विषय तथा नई शैली में किए गए प्रयोगों को लिया जा सकता है। इनमें रूद्रहांजी द्वारा

निर्मित मजदूर, ड्रेगन, दांत का डॉक्टर, माता और पुत्र, लोहार, तानाशाह, चिड़िया आदि मूर्तियों को लिया जा सकता है।

चौथे वर्ग में- रूद्रहांजी द्वारा निर्मित प्राचीन मूर्तियों की प्रतिकृतियों को लिया जा सकता है। इस वर्ग के अन्तर्गत पवाया की विष्णु प्रतिमा तथा ग्यारसपुर की नायिका उत्तम उदाहरण हैं। श्री रूद्र की इन कृतियों में एक सशक्त तथा समर्थ कल्पनाशील मौलिक चित्रकार की कला अपने उत्कृष्ट रूप में दिखाई देती है। रूद्रहांजी की हस्तलिपि भी अत्यंत आकर्षक थी। उनकी हस्तलिपि किसी रेखाचित्र के समान प्रतीत होती है।

रूद्रहांजी की मूर्तिकला के अन्य उल्लेखनीय उदाहरण पद्मा विद्यालय परिसर में स्थापित विशालाकार वीणावाणिनी सरस्वती, प्राकृत आकार में 'एरावत' एवं सभाभवन में उकेरे 'नटराज' हैं। भोपाल में रवीन्द्र भवन की महामुद्रा रूद्रहांजी की 'नटराज' की प्रतिकृति ही है। रूद्रहांजी द्वारा निर्मित 'नटराज' की एक और भव्य प्रतिमा विद्या मंदिर मुरार में स्थापित है। विद्यामंदिर मुरार के मुख्य द्वार पर भी रूद्रप्पा जी की विशालतम रचना है। विद्यामंदिर में स्थापित 'नटराज' की प्रतिमा में कलाकार ने मानों प्राण फूँक दिए हैं। 'नटराज' शिव की प्रतिमा गतिपूर्ण महाकाव्य-सी प्रतीत होती है। नटराज शिव संसार की लय की प्रतीक ज्वाला को अपने कर कमल में धारण किए हुए है। नाग, धतूरा, चन्द्रमा आदि का भी प्रतीकात्मक अंकन किया गया है। मण्डप के स्तंभों पर पार्वती तथा मृदंग वादन करते मानवरूपी नंदी उत्कीर्ण है। 'नंदी' का मानवीकरण नागवंशी मूर्तिकला में भी प्राप्त होता है, अपितु सौष्ठव, ऊर्जा और गति की सशक्त अभिव्यक्ति ने रूद्रप्पा के नंदी को प्रशंसनीय और दर्शनीय बना दिया है। 'नटराज' के प्रवेश द्वार पर उकेरे अलंकरण में लघु आकारीय हंस आकृतियाँ अत्यंत लयात्मक व भावपूर्ण हैं। 'नटराज' मण्डप तथा विद्यामंदिर का प्रवेश द्वार रूद्रहांजी के मूर्तिशिल्प के श्रेष्ठ उदाहरण हैं।

रूद्रहांजी ने अपनी मूर्ति कृति महात्मा गांधी की दांडी यात्रा में जहाँ गांधी जी की गतिमूर्ति मुद्रा में मांसपेशियों के खिंचाव तथा नसों के तनाव को उकेरा है वहीं 'तथागत-गौतम' की पद्मासन में स्थित ध्यान मुद्रा में शांत, वैराग्य भाव को कुशलता से दर्शाया है। 'रूपगर्विता' नामक प्रतिमा में रूद्रहांजी नारी की लज्जाशील कमनीयता को दर्शाने में पूर्णतया सफल रहे हैं।

जिस प्रकार हरिहरनिवास द्विवेदी जी ने रूद्रहांजी की मूर्तिकला को चार वर्गों में विभाजित किया है उसी प्रकार उनके चित्रों को विषय एवं शैली के आधार पर मैंने चार वर्गों में बाँटने का प्रयास किया है–

प्रथमतः- जिन चित्रों में रूद्र जी ने सामान्य जनजीवन संबंधी विषयों पर चित्रांकन किया है, चित्र जिसमें गरीबी, चिन्ता आदि विषयों पर चित्रांकन किया है।

दूसरे वर्ग में- व्यंग्यात्मक एवं प्रतीकात्मक चित्रण को लिया जा सकता है। इस वर्ग में परतंत्र भारत, नेता, कलाकार का चिंतन आदि कृतियाँ ली जा सकती हैं। इन चित्रों के माध्यम से रूद्रहांजी ने तत्कालीन राजनीति एवं समाज पर करारा व्यंग्य किया है।

तृतीय वर्ग में- प्राकृतिक दृश्य चित्रण आते हैं। रूद्रहांजी के इन चित्रों में पूर्णतः चीनी प्रभाव परिलक्षित होता है। घाटियों की गहराई, झरनों का ऊँचे स्थान से गिरना, खिले पुष्पों का अंकन मनमोहक है।

चतुर्थ वर्ग में- रेखांकन तथा अलंकरणात्मक रेखाचित्र लिए जा सकते हैं, ऐसे चित्रों में बंगाल शैली का प्रभाव झलकता है साथ ही तूलिका आघात एवं संयोजन में चीनी प्रभाव परिलक्षित होता है। रूद्रहांजी के पुरुष एवं हरिणाकृति तथा कुछ दृश्यों के रेखाचित्र इस श्रेणी में रखे जा सकते हैं।

बहुआयामी कलाकार रूद्रहांजी अपने जीवनकाल में अनेक सम्मानों से विभूषित किए गए। 1940 में अखिल एशिया कला प्रदर्शनी में पुरस्कृत हुए। 1950 में अखिल भारतीय कालिदास प्रदर्शनी में 'मूर्तिकला' के लिए पुरस्कृत हुए। 1954 में एक अखिल भारतीय प्रतिनिधिमण्डल के सदस्य के रूप में चीन गए। 1973-74 में 'रूद्रहांजी' को मध्यप्रदेश कला परिषद द्वारा सम्मानित किया गया। 1975 में अखिल भारतीय मूर्तिकला मंच के अध्यक्ष चुने गए। 1979-80 में मूर्तिशिल्प पर प्रयोग करते हुए पद्मा विद्यालय के सभा भवन को आधुनिक एलोरा बनाने में व्यस्त रहे, इसके लिए उन्हें 1979 में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय छात्रवृत्ति प्रदान की गई थी। प्रयोग के अंतिम दिवस तक उनका अनवरत श्रम जारी रहा।

रूद्रहांजी के अनेक मूर्तिशिल्पों से ग्वालियर भरा हुआ है। ग्वालियर किले पर लगने वाला सिंधिया विद्यालय, पद्मा विद्यालय के उत्कृष्ट मूर्तिशिल्प कला की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, परन्तु उनकी चित्रकृतियाँ व्यवस्थित रूप में कहीं प्रदर्शित नहीं की गई हैं।

सुदूर कर्नाटक में जन्मे 'रूद्रप्पा' ने अपने जीवन के मूल्यवान 40 वर्ष ग्वालियर को समर्पित किए। यह हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम इस कलासिद्ध पुरुष को गहराई से जानें और उनके अमूल्य कला संग्रह को उचित सम्मान के साथ प्रदर्शित करें ताकि आने वाली पीढ़ी यह जाने कि ग्वालियर में एक ऐसा पूर्ण समर्पित कलाकार था जो जीवन के अंतिम क्षण तक कला-साधना में रत रहा, जिसकी कलाकृतियों में विषय की स्पष्टता, कल्पना की प्रखरता एवं अभिव्यक्ति की तेजस्विता के दर्शन होते हैं। ऐसे अद्भुत बहुआयामी कलासाधक से हम कुछ सीखें, प्रेरणा लें यही हमारी कलाकार के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

❖